डॉ. राजा रामन्ना
भारतीय परमाणु कार्यक्रम के स्तंभ

यह अक्सर कहा जाता है कि प्रतिभा अपना रास्ता स्वयं ढूँढ लेती है। भारत के प्रख्यात परमाणु वैज्ञानिक डॉ. राजा रामन्ना के बारे में यह बात सटीक बैठती है। जैसे-जैसे शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में वे आगे बढ़ते गए, राहें खुद खुलती चली गई। भौतकी के निष्णात विद्यार्थी डॉ. रामन्ना के उत्कृष्ट कार्यों का पहला प्रमाण तब मिला जब 1963 में उन्हें शांतिस्वरुप भटनागर स्मृति पुरस्कार प्रदान किया गया। इस पुरस्कार से संतुष्ट होकर बैठ जाने की बजाए उन्होंने अपने कदम परमाणु अनुसंधान की ओर तेजी से बढ़ाए। अपने संगीत ज्ञान और संगीत प्रेम को श्वास की तरह प्राकृतिक मानने वाले डॉ. रामन्ना पियानो के कुशल वादक थे। लेकिन यह वादन उनके आत्मसंतोष, और अनुभूति तक ही सीमित था।

स्व. राजा रामन्ना : भारत के एक अनमोल रत्न

संगीतज्ञ, दार्शनिक, वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ डॉ. रामन्ना ने अपने कैरियर की विधिवत शुरुआत वर्ष 1949 में चौबीस वर्ष की आयु में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च से की थी। भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के निदेशक (वर्ष 1972-78), केन्द्रीय रक्षामंत्री के सलाहकार (1978), परमाणु ऊर्जा सचिव की भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन करने वाले डॉ. रामन्ना को भारत के परमाणु बम कार्यक्रम का प्रणेता माना जाता है। पद्मश्री, पद्मभूषण, पद्मविभूषण सम्मानों से नवाजे गए डॉ. रामन्ना समाज के कुछ चुनिंदा क्षेत्रों में भी सक्रिय रहे। भारतीय विद्या भवन, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज से उनका जुड़ाव विशेष रहा। दरअसल, डॉ. रामन्ना उस राह की तलाश कर रहे थे जिसका मुकाम समाज और विज्ञान का उपयोगी रिश्ता था। उनकी कल्पना थी कि विज्ञान को समाज हित के निकट लाया जाए। कुछ इसी तरह का संकल्प राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम ने लिया था। संभवतः यही प्रेरणा वजह है कि डॉ. रामन्ना को राष्ट्रपति ने अपना गुरु कहा।

रत्न आसमान से नहीं आते। वे धरती की उपज होते हैं। भारत भूमि ने अनेक रत्नों को जन्म दिया है। डॉ. राजा रामन्ना इस भारत भूमि के एक ऐसे ही रत्न थे जिन्होंने भारतीय विज्ञान क्षेत्र को एक नई आभा प्रदान की।

28 जनवरी 1925 को कनार्टक के तुमकुर में जन्मे डॉ. रामन्ना न्यूट्रॉन फिजिक्स, न्यूक्लियर फिजिक्स और विखंडन भौतिकी में विशेषज्ञ थे, जो परमाणु बम विस्फोट प्रौद्योगिकी के लिए जरुरी विषय है।

प्रथम पोखरण परमाणु परीक्षण में अहम भूमिका निभाने वाले डॉ. रामन्ना को वर्ष 1990 में राज्यसभा का सदस्य नामित कर रक्षा राज्यमंत्री बनाया गया। डॉ. रामन्ना वर्ष 1978 में रक्षा मंत्रालय में वैज्ञानिक सलाहकार बनाए गए थे। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र के निदेशक और परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष सहित तमाम पदों पर रहे डॉ. रामन्ना भारतीय विद्या भवन से भी करीब से जुड़े थे।

पोखरण प्रथम विस्फोट को याद करते हुए डॉ. रामन्ना ने बताया कि वह बहुत ही उत्तेजनापूर्ण क्षण था। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के सलाहकार और अन्य लोग विस्फोट को स्थगित करने की सलाह दे रहे थे, लेकिन श्रीमती गाँधी अटल थी। उनका मानना था कि दुनिया को भारत की शक्ति दिखाना जरुरी है। डॉ. रामन्ना का कहना था कि पोखरण विस्फोट परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए किया गया था। हम सिर्फ दुनिया को अपनी श्रेष्ठता दिखाना चाहते थे। आज देश की शान बन चुके और जिन्हें हम डाक टिकट पर भी देखते है, परमाणु रिसर्च रिएक्टर अप्सरा, सायरस और पूर्णिमा की डिजाइन और स्थापना का श्रेय डॉ. रामन्ना को है। डॉ. रामन्ना भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य से लेकर अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी विएना के भी महानिदेशक रहे। इसके अलावा विएना में ही 1986 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की 30 वीं जनरल कॉन्फ्रेन्स के अध्यक्ष भी रहे। व्यापक जनसंहार के हथियार परमाणु बम (पोखरण प्रथम) को बनाने वाले दल के प्रमुख डॉ. रामन्ना का कहना था कि यह देश की आजादी को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए जरुरी है, किसी पर हमला करने के लिए नहीं। शांति के पक्षधर ये परमाणु वैज्ञानिक सदैव परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोगों के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। इसी को देखते हुए आपको संयुक्त राष्ट्रसंघ ने परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण इस्तेमाल के लिए बने संगठन का सदस्य बनाया। शिक्षा में सुधार के अगवा रहे डॉ. रामन्ना को कर्नाटक सरकार ने उनके अनुभवों के लाभ लेते हुए शिक्षा पर एक कार्यबल का चेयरमैन बनाया।

डॉ. रामन्ना 1983-87 के दौरान परमाणु ऊर्जा आयोग के अध्यक्ष रहे। वे 1972-78 और 1981-83 के दौरान भाभा परमाणु अनुसंधान शोध केन्द्र के निदेशक रहे। सुनकर कुछ अजीब लगता है कि कोई वैज्ञानिक संगीतज्ञ हो, लेकिन

उनका कहना था कि संगीत उसी तरह से मेरे जीवन के लिए जरुरी है, जिस तरह से साँस लेना। यह कहना अतिरंजना भी नहीं होगा यदि वे वैज्ञानिक नहीं होते तो वे शायद विज्ञान से अधिक प्रसिद्धि संगीत में पाते। बचपन से पियानो के प्रति उनके शौक ने उन्हें मैसूर के शासक कृष्णराजा वाडिय्यर के दरबार में खींच लिया था। राजा ने पियानो सुनकर उन्हें उपहार में दो सौ रुपए दिए, जो उस 12 वर्षीय किशोर को बहुत अधिक लगे थे। बाद में आपने 1993 में संगीत पर एक पुस्तक लिखी "दी स्ट्रक्चर ऑफ म्यूजिक इन रागा एंड वेस्टर्न सिस्टम्स"।

एक सुबह किशोर राजा रामन्ना को उनके बड़े भाई ने नींद से जगाकर कहा था-उठो, नेहरुजी आ रहे हैं, देखने चलते हैं। तब उस अबोध ने अपने भाई से पूछा था-क्या नेहरुजी हमारे राजा (मैसूर रियासत के) से भी बड़े हैं? उसी किशोर राजा रामन्ना का युवावस्था में एक वैज्ञानिक के रुप में नेहरुजी से मिलना एक रोमांचक क्षण था। डॉ. रामन्ना के मुताबिक नेहरुजी बड़े नेता थे, लेकिन इंदिराजी दृढ़ निश्चयी थी।

आमतौर पर लोग डॉ. रामन्ना के जीवन के सिर्फ दोही पहलुओं से परिचित है, एक वैज्ञानिक और दूसरा संगीत के शौकीन। बहुत कम लोगों को जानकारी है कि विज्ञान के मामले में देश-विदेश में परचम फहराने वाले वैज्ञानिक डॉ. राजा रामन्ना का धर्म और अध्यात्म से भी बहुत लगाव था। वे आदि शंकराचार्य के दर्शन और सिद्धांतों से बहुत अधिक प्रभावित थे। 10 वीं सदी की वैष्णव संप्रदाय की महान काव्य रचना मुकुंद माला का आपने अनुवाद किया। इसके अलावा आप भगवान कृष्ण की एक मूर्ति ब्रीफकेस में अपने साथ हमेशा रखते थे।

जिन्हें राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ने एक बार अपना गुरु कहा था, डॉ. रामन्ना देश में विज्ञान के प्रचार में जीवनपर्यंत रत् रहे। उन्हें अनेक पुरस्कार सम्मान भी मिले। उन्हें देश का सर्वोच्च वैज्ञानिक पुरस्कार शांतिस्वरूप भटनागर मेमोरियल अवॉर्ड भी प्राप्त हुआ था।

रामन्ना का केट स्थापना में योगदान

प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र (आर आर केट) की स्थापना से इंदौर को विश्व मानचित्र पर लाने वाले महान वैज्ञानिक डॉ. राजा रामन्ना ही थे। डॉ. रामन्ना उस स्थल चयन समिति के अध्यक्ष थे , जिसकी वजह से इंदौर में आर आर केट की स्थापना हुई। डॉ. राजा रामन्ना का इंदौर से जीवंत संपर्क रहा। आर आर केट में चलने वाले अनुसंधान कार्यों के सिलसिले में डॉ. राजा रामन्ना इंदौर आते ही रहते थे।

डॉ. रामन्ना के परिवार में उनकी पत्नी के अलावा दो पुत्रियाँ और एक पुत्र हैं। निधन के पूर्व भौतिकविद् पिछले 15 वर्षों से हृदय रोग से पीड़ित थे तथा उनकी बायपास सर्जरी व एंजियोप्लास्टी की गई थी।

जून 1982 को भी मौत के क्रूर हाथ उनकी ओर बढ़े थे, जब एयर इंडिया का बोइंग विमान कुआलालंपुर से लौटते समय मुंबई के हवाई अड्डे पर उतरते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया और विमान के तीन टुकड़े हो गए। विमान में राजा रामन्ना चमत्कारिक ढंग से बच गए। डॉ. रामन्ना न केवल विमान से कूद गए बल्कि उन्होंने कई लोगों को विमान के बाहर खींच निकाला। लेकिन 24 सितंबर 2004 की तड़के भारत को गौरवशाली परमाणु क्लब का सदस्य बनाने वाला यह महान वैज्ञानिक भारत माता को सदा के लिए जय हिन्द कह गया।

(नईदुनिया से साभार)